

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

श्रीमद्भागवते दशमस्कन्धे
॥ श्रीमूढुकुन्दस्तुतिः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

॥ श्रीमुचुकुन्दस्तुतिः ॥

रिमोहितोऽयं जन ईशमायया
 ९रदीयया ९रां न भजत्यनर्थदृक्।
 सुखाय दुःखप्रभरेषु सज्जते
 गृहेषु योषि९पुरुषश्च रक्षितः ॥ 1 ॥

लङ्करा जनो दुर्लभमत्र मानुषं
 कथञ्चिदर्यसमयत्नतोऽनघ।
 पादारविन्दं न भजत्यसन्मतिः
 गृहान्कूपे पतितो यथा पशुः ॥ 2 ॥

ममैष कालोऽजित निष्फलो गतो
 राज्यप्रियोऽन्नद्धमदस्य भूपतेः।
 मर्त्यान्नुबुद्धेः सुतदारकोशभू -
 ९रासज्जमानस्य दुरन्तचिन्तया ॥ 3 ॥

कलेररेहस्मिन्घटकुड्यसन्निभे
 निरूढमानो नरदेर इत्यहम्।
 ब्रूतो रथेऽश्वपदात्यनीकपैः
 गां पर्यटंस्त्रागणयन्नुदुर्मदः ॥ 4 ॥

प्रमत्तमुच्चैरिति कृत्यचिन्तया
 प्रबृद्धलोभं विषयेषु लालसम्।
 ९रमप्रमत्तः सहसाभिपद्यसे
 म्फुल्लेलिहानोऽहिरिराखुमन्तकः ॥ 5 ॥

পুরা রথৈর্হেমপরিষ্কৃতৈশ্চরন্
মতঙ্গজৈর্রা নরদেরসঞ্জিতঃ।
স এর কালেন দুরত্যেযন তে
কলেররো রিটকুমিভস্মসঞ্জিতঃ ॥ 6 ॥

নির্জিত্য দিক্চক্রমভূতরিগ্রহো
ররাসনস্বঃ সমরাজরন্দিতঃ।
গৃহেষু মৈথুন্যসুখেষু যোষিতাং
ক্রীডাম্গঃ পুরুষ ঈশ নীযতে ॥ 7 ॥

করোতি কর্মাণি তপস্সুনিষ্ঠিতো
নিরুত্তভোগস্তদপেক্ষয়া দদৎ।
পুনশ্চ ভূযেযমহং স্বরাডিতি
প্রবৃদ্ধতর্ষো ন সুখায় কল্পতে ॥ 8 ॥

ভরাপরর্গো ভ্রমতো যদা ভরে -
জ্জনস্য তর্হ্যচ্যুত সৎসমাগমঃ।
সৎসঙ্গমো যর্হি তদৈর সদগতো
পরাররেশে ংরযি জাযতে মতিঃ ॥ 9 ॥

মন্যে মমানুগ্রহ ঈশ তে কৃতো
রাজ্যানুবন্ধাপগমো যদৃচ্ছয়া।
যঃ প্রার্থ্যতে সাধুভিরেকচর্য়য়া
রনং রিরিক্ষন্দিরখণ্ডুমিপৈঃ ॥ 10 ॥

ন কামযেহন্যং তর পাদসেরনা -
দকিঞ্চনপ্রার্থ্যতমাদ্বরং রিভো।
আরাধ্য কস্ত্রাং হ্যপর্গদং হরে
বৃণীত আর্যো ররমাত্মবন্ধনম্ ॥ 11 ॥

তস্মাদ্বিসৃজ্যাশিষ ঈশ সর্বতো
রজস্তমঃসত্ত্বগুণানুবন্ধনাঃ।
নিরঞ্জনং নিৰ্গুণমদ্বয়ং পরং
ৎরাং জ্ঞাপ্তিমাত্রং পুরুষং ব্রজাম্যহম্ ॥ 12 ॥

চিরমিহ বৃজিনার্তস্তপ্যমানোহনুতাপৈ -
ররিতৃষষডমিত্রোহলন্ধশান্তিঃ কথঞ্চিৎ।
শরণদ সমুপেতস্ত্বৎপদাজ্জং পরাত্ম -
ন্নভযমৃতমশোকং পাহি মাপন্নমীশ ॥ 13 ॥

॥ ইতি শ্রীমুচুকুন্দস্ততিঃ সমাপ্তা ॥